संस्कृति

T-1

कुछ चित्र

१. लाऊड स्पीकर लगा है तथा लोग मंडप के बाहर भद्दा नृत्य कर रहें हैं
२. भगवान के सामने सभी हाथ जोड़कर खड़े हैं और आरती चल रही है

बच्चों आपको इन चित्रों में से कौनसा चित्र योग्य लगता है कौनसा अयोग्य? क्यों?

T-2

प्रस्तावना

बच्चों, कल्पना कीजिए वह काल जब मानवी सभ्यता का उदय हुआ था | हमारे पूर्वज तब गुफाओं में रहते थे | जहाँ खाने-कपड़ों का भी ठिकाना न हो वहाँ सभ्यता और संस्कृति की बातें कहाँ से हो सकती थी ?

जैसे-जैसे समय बीता आदिमानव ने अपने समझ से काम लेना शुरू किया, नीति और मूल्यों का निर्माण शुरू किया अच्छे-बुरे का मापदंड बनाया..... इन्हीं बातों ने जन्म दिया संस्कृति को और संस्कृति जब व्यवहार बनी तब सभ्यता का उदय हुआ.....

हमारी संस्कृति कहती है, मातृ देवोऽभव पितृ देवोऽभव, इसी कारण ही हम अपने माता-पिता को आदर दिखाने हेतु उन्हें प्रणाम करते हैं, यह हमारी सभ्यता है |

प्रस्तुत पाठ में लेखक भदन्त आनन्द कौशल्यायन ने इसी बात पर जोर दिया है... लेखक स्वयं बौध्द भिक्षु होने के कारण उनका लेखन आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण है | उनके विचारों में गांधीजी के विचारों की भी छाप दिखाई देती है|

प्रस्तुत पाठ में उन्होंने अत्यंत सरल शब्दों में संस्कृति तथा सभ्यता का अर्थ बताया है |

T-3

सभ्यता (Civilization) से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है जबकि संस्कृति (Culture) से मानसिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है।

संस्कृति तथा सभ्यता में अंतर बताने के लिए लेखक ने उदाहरण लिया है..... आग और सुई-धागे का...

लेखक के अनुसार आग या सुई-धागा के खोज करने की शक्ति, संस्कृति है क्योंकि यह खोज किसी प्रेरणा, योग्यता का परिणाम है.. और उस शक्ति के परिणामस्वरूप जिस चीज की खोज हुई जिसका उपयोग सारी मानव जाति को हुआ, उसे हम सभ्यता कहेगें|

जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्तिविशेष की संस्कृति; और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता |

T-4

आपके अनुसार मानवसंस्कृति के विकास के क्या कारण हो सकते हैं ? क्या सिर्फ भौतिक प्रेरणा अर्थात आसान शब्दों में जीवन के सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने की इच्छा या ज्ञानेप्सा अर्थात ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा ही मानवसंस्कृति के विकास के कारण है?

लेखक इस संकुचित विकास के कारणों से आगे जाकर मानवसंस्कृति के विकास के अन्य कारण के बारे में बतातें हैं |

निःस्वार्थ भाव से दूसरे की मदद करने वाला व्यक्ति, अपने बच्चे के लिए रात-रात भर जगने वाली माँ हमारी संस्कृति को एक नया आयाम देती है |

लेनिन, कार्ल मार्क्स और गौतम बुध्द जैसे लोगों ने न सिर्फ अपने विचारों से अपितु अपने आचार से भी मानवी संस्कृति को एक अलग दृष्टिकोण दिया |

लेनिन और कार्ल मार्क्स ने परिश्रम को सम्मान दिलाया .....

और गौतम बुध्द ने मानवता का धर्म बताया....

लेखक के अनुसार यह सारी बातें संस्कृति में ही निहित हैं.... फिर वह सुई- धागे का आविष्कार हो, तारों की जानकारी देने वाला शास्त्र हो या फिर मानवी मूल्यों का परिचय देने वाला कोई काम हो...

T-5

लेखक के अनुसार सभ्यता संस्कृति का परिणाम है | संस्कृति के आधार पर ही हमारे खान-पान के तरीके, ओढने-पहनने के तरीके हमारे गमना-गमन के साधनों आदि का विकास होता है..... और यही सभ्यता होती है....

उदाहरण के लिए महाराष्ट्रीय खान-पान की संस्कृति के अनुसार खाने में सर्व-समावेशकता होना अनिवार्य है, इसी कारण से महाराष्ट्रीय सभ्यता में थाली को इस प्रकार सजाया जाता है|(महाराष्ट्रीय थाली का चित्र)

यही बात सत्य है हमारे पहनावे तथा रहन-सहन के बारे में.....

हमारे संस्कार कहते हैं.... "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादऽपि गरीयसी" अपनी मातृभूमी को माता समझने के संस्कार ने हमारी सभ्यता को अनेक वीरों की देन दी... न सिर्फ स्वतन्त्रता प्राप्ति के दौरान अपितु आज भी हमारे वीर जवान सीमा पर इसी संस्कार के कारण अपना सर्वस्व लूटाते हैं |

T-6

बच्चों, मानव की योग्यता अच्छे –बूरे में फरक नहीं करा पाती है यह फरक हमारे संस्कार हमें करना सीखाते हैं |

परन्तु आज का मानव स्वार्थ में इस कदर अंधा हो चुका है कि वह अपने संस्कारों को, अपने अच्छे-बूरे सोचने की शक्ति को अनदेखा कर देता है और अपने स्वार्थ की ही बात सुनता है..

अपनी योग्यता का दुरूपयोग करते हुए वह आत्मविनाश के साधनों का आविष्कार करता है, लेखक कहे हैं कि यह संस्कृति नहीं असंस्कृति है... और इन साधनों के बल पर वह निरंतर आत्मविनाश जे साधनों में जुटा है, वह सभ्यता नहीं असभ्यता है |

उदाहरण के लिए मानव ने अपनी योग्यता से अणु का आविष्कार किया ... और अब इन अणुओं का उपयोग वह विनाशकारी साधनों के निर्माण के लिए कर रहा है | मानव ने अपने संस्कारों को महत्त्व नहीं दिया अपितु अपने स्वार्थ को महत्व दिया |

लेखक कहते हैं कि अगर संस्कृति के साथ कल्याण की भावना हो तभी वह संस्कृति कहलाती है अन्यथा उसे असंस्कृति कहेगें .. और इस असंस्कृति का परिणाम असभ्यता के अलाव और कुछ भी नहीं हो सकता है |

T-7

जिस प्रकार आने वाले काल में हमें सजगता से संस्कृति और असंस्कृति में फरक करना पड़ेगा उसी प्रकार हमें प्राचीन काल से चली आ रही सभी परंपराओं का भी सजगता से अभ्यास करना होगा| खासकर वें परंपराएँ जो भले ही अपने-आप को संस्कार का अविभाज्य अंग मानती हों पर आज की तारीख में काल-बाह्य हो गईं हो |

समय निरंतर बदलता रहता है और समय के साथ-साथ परिस्थिति भी बदलती रहती है... लेखक के अनुसार हमें हमारे संस्कारों भी समय के अनुरूप ढालना होगा |

जैसे पहले जमाने में स्त्रियों के संस्कार उन्हें घर में रहने के लिए बाध्य करते थे... पर अब परिस्थिति बदल चुकी है| आज नारी के स्वावलंबन और स्वतन्त्रता को अधिक महत्त्व दिया जाता है.... इस जमाने भी अगर कोई उन्हीं पुराने संस्कारों को लेकर बैठ गया तो प्रगति ही नहीं करा पाएगा | अतः समय के साथ अपनी सोच को बदलते हुए जो संस्कार मात्र अंधविश्वास या दकियानूसी ख्यालात को दर्शाते हों... हमें तुरंत ही छोड़ देना चाहिए क्योंकि न वें संस्कार हैं और ना ही उन्हें संभालकर रखने की आवश्यकता है |

T-8

योग्यता के साथ-साथ संस्कारों में जरूरत होती है मैत्री-भाव की .... जब कल्याणकारी भाव तथा प्रज्ञा अर्थात बुध्दि एकसाथ आकर किसी नए संस्कार को जन्म देते हैं तब वह संस्कार जाति-धर्म से उपर उठकर सभी मानव-जाति के लिए उपयोगी सिध्द होता है | ऐसे संस्कार की रक्षा के लिए या इसे संस्कार के प्रचार के लिए किसी हत्यार-बंद दलबन्दियों की आवश्यकता नहीं होती है |

लेखक मानव- संस्कृति को धर्म से श्रेष्ठ मानते हैं .. इसे वे मानवसंस्कृति का अविभाज्य अंग मानते हैं | लेखक भदन्त आनन्द कौशल्यायन के अनुसार निरंतर परिवर्तित हो रहे इस समाज में अगर संस्कार के साथ कल्याण की भावना हो तभी वे संस्कार स्थायी रह सकते हैं |

T-9

उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ हमें संस्कार और सभ्यता के वास्तविक रूप के बारे में बताता है |

हम व्यक्ति की ऊंचाई नाप सके हैं, उसका वजन नाप सकते हैं.... पर संस्कारों को किस प्रकार नाप जाए?

व्यक्ति अपने संस्कारों से तब पहचाना जाता है जब वह उन संस्कारों को अपने बर्ताव का अभिन्न अंग बना ले.. अर्थात जब वह उन संस्कारों को अपनी सभ्यता बना ले |

रास्ते पर थूँकना गलत है यह संस्कार हम सब में होता है.. पर कितने व्यक्ति इसे अपने बर्ताव में उतार पाते हैं? इसी कारण यह संस्कार, संस्कार बन कर रह जाता है.. हमारी सभ्यता नहीं बन पाता...

सोचो, हमारे संस्कार हमें कहते हैं कि सभी मानव समान हैं कोई किसी से कम या ज्यादा नहीं ... फिर भी हम भेद-भाव करते हैं... क्या यह हमारी सभ्यता है?

बच्चों यह पाठ हमें यह प्रेरणा देता है कि हमें हमारे संस्कारों को समझें और उन्हें अपने बर्ताव में उतारने की कोशिश करें.. ताकि वे हमारी सभ्यता बन जाएँ | साथ ही वे सारे संस्कार जो कालबाह्य हो चुके हैं उन्हें भी समझे तथा बदलने की कोशिश करें |

मूल्याकंन

१. कौन-से दो शब्द हमें सबसे कम समझ आतें हैं?

अ. पैसा और संपत्ति

आ. प्रेम और आदर

इ. सभ्यता और संस्कृति

ई. माया और ममता

२.मानव जाति के लिए सबसे उपयुक्त आविष्कार कौन-सा था?

अ. अग्नि का आविष्कार

आ. गाडी का आविष्कार

इ. मोबाईल का आविष्कार

ई. टेलीफोन का आविष्कार

३. संसार के मजदूरों को सुखी देखने का सपना किसने देखा?

अ.कार्ल मार्क्स

आ. हिटलर

इ. चर्चिल

ई. मुसोलोनी

४. संस्कृति में ---------- का अंश होना ही चाहिए|

अ. धर्म

आ. कल्याण

इ. संपत्ति

ई. सत्ता

Worksheet

१. आपके अनुसार सभ्यता और संस्कृति में क्या अतंर है? अपनी बात उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें|

२. भौतिक प्रेरणा तथा ज्ञानेप्सा के अतिरिक्त मानव समाज को किन बातों की आवश्यकता है?

३. संस्कृति सभ्यता को किस प्रकार प्रभावित करती है?

४. पूराने रीती-रीवाजों की ओर हमें किस नजरिए से देखना चाहिए? क्यों?

५. किस प्रकार की संस्कृति अकल्याणकारी होती है? क्यों?

६. आपके अनुसार भविष्य में किन बातों का ध्यान रखकर हमें संस्कृति तथा सभ्यता का निर्माण करना होगा?

७. आपके अनुसार हमें किन परंपराओं को बदलना चाहिए?क्यों?

परियोजना कार्य

व्यक्तिगत परियोजना :-

आपको आपके आस-पास रहने वाले बड़े-बुजुर्गों से पूछकर पुरानी परंपराओं की एक सूचि बनानी है तथा उन परंपराओं में जो परंपराएं कालबाह्य हैं उन्हें बदलने के लिए आप क्या कर सकतें हैं यह भी आपको लिखना है|

यह सूचि आपको इस प्रकार बनानी है:-

सभ्यता और संस्कृति में निम्नलिखित अन्तर पाये जाते हैं-

- सभ्यता और संस्कृति में मौलिक अन्तर यह है कि, सभ्यता का सम्बन्ध जीवन यापन या सुख-सुविधा की बाहरी वस्तुओं से है, जबकि संस्कृति का सम्बन्ध आन्तरिक वस्तुओं से।
- सभ्यता की माप की जा सकती है, किन्तु संस्कृति की माप नहीं की जा सकती। उदाहरण के लिए - ऐसा बता देना अधिक आसान है कि साइकिल की अपेक्षा मोटरगाड़ी अधिक उपयोगी है, किन्तु प्रमाण प्रस्तुत करना कठिन है कि पश्चिमी संस्कृति की अपेक्षा भारतीय संस्कृति श्रेष्ठ है। इसके लिए कोई भी मापदण्ड नहीं है।
- सभ्यता की उन्नति अल्पकाल में होती है, जबकि संस्कृति विस्तृतकालीन सभ्यता की परिणति है।
- सभ्यता का प्रसार तीव्र गति से होता है, किन्तु संस्कृति का प्रसार धीरे-धीरे, लेकिन लगातार होता है।
- सांस्कृतिक वस्तुएँ प्रतियोगिता रहित होती हैं, किन्तु सभ्यता का आधार प्रतियोगिता है। दो आविष्कारों में प्रतियोगिता होती है, किन्तु आध्यात्मिकता में कोई प्रतियोगिता नहीं होती।

- सभ्यता साधन है, जबकि संस्कृति साध्य है। साध्य का तात्पर्य अन्तिम लक्ष्य से है, जिसमें असीम सन्तुष्टि का अनुभव होता है और इस असीम सन्तुष्टि की प्राप्ति के लिए जो विधि अपनाई जाती है, उसे साधन कहते हैं।
- **काण्ट** ने सभ्यता और संस्कृति के अन्तर को स्पष्ट करते हुए कहा है कि सभ्यता बाह्य व्यवहार की वस्तु है, परन्तु संस्कृति नैतिकता की आवश्यकता होती है तथा यह आन्तरिक व्यवहार की वस्तु है।
- **जिसबर्ट** के अनुसार, सभ्यता बताती है कि, 'हमारे पास क्या है', और संस्कृति यह बताती है कि, 'हम क्या हैं'।
- सभ्यता में सुधार किया जा सकता है, किन्तु संस्कृति में नहीं। साधारण व्यक्ति भी श्रेष्ठ आविष्कारों में सुधार कर सकता है, किन्तु प्रतिष्ठित कवि और कलाकार की कविता व कलाकृति में साधारण व्यक्ति सुधार नहीं कर सकता।
- संस्कृति में गहराई होती है, जबकि सभ्यता में गहराई का अभाव होता है। मोटर और ट्रेक्टर की मशीन का ज्ञान सभी को हो सकता है, किन्तु संस्कृति की गहराई तक सब व्यक्ति नहीं पहुँच सकते।
- **ग्रीन** ने सभ्यता व संस्कृति के मध्य अन्तर को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, 'एक संस्कृति तब ही सभ्यता बनती है, जबकि उसके पास एक लिखित भाषा, दर्शन, विशेषीकरणयुक्त श्रम विभाजन, एक जटिल विधि और राजनीतिक प्रणाली हो।'
- **गिलिन व गिलिन** के अनुसार, 'सभ्यता संस्कृति का अधिक जटिल तथा विकसित रूप है।'